

रॉबर्ट वानॉय, फ़ाउंडेशन बाइबिल भविष्यवाणी, व्याख्यान 21ए

चतुर्थ. जोनाह

सी. जोनाह की सामग्री

हम योना की किताब में थे, जो रोमन अंक IV है। दूसरे खंड में हमने पुस्तक के चरित्र की अभिव्यक्ति पर गौर किया। यह ऐतिहासिक लेखन है या नहीं? तो हम सी., "पुस्तक की सामग्री" पर आते हैं और मेरे पास दो उप-बिंदु हैं। मैं सभी चार अध्यायों पर काम नहीं करूंगा। लेकिन मैं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के बारे में बात करना चाहता हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि इसका किताब के संदेश से संबंध है। फिर दूसरी बात मैं पुस्तक के उद्देश्य को देखना चाहता हूँ।

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ए. असीरिया का बाहरी आरोहण तो पहले "ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।" पहला, ए., "बाहरी", योना के समय इज़राइल के बाहर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर क्या स्थिति थी। मैं इस पर आगे बढ़ना चाहता हूँ इसलिए मैं इसे पूरा नहीं पढ़ूंगा बल्कि इसका सारांश दूंगा। आप ओम्री के समय के बारे में ध्यान दें, अशूर फिर से ताकत हासिल करना शुरू कर देता है। अशूर-नासिर-पाल (883-859 ईसा पूर्व) असीरियन शक्तिशालियों में से एक है जो असीरियन शक्ति को फिर से स्थापित करता है। सैन्य दृष्टि से असीरियन क्रूर लड़ाके थे; मेरे पास आपके हैंडआउट्स में अशूरियों द्वारा उपयोग की जाने वाली क्रूर प्रकार की रणनीतियों और युक्तियों का विवरण है। लेकिन मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि असीरिया ने इसराइल को प्रभावित करना शुरू कर दिया था। आपने देखा होगा कि इसराइल की असीरिया के साथ सिलसिलेवार मुठभेड़ें हुई थीं। अहाब (853 ईसा पूर्व) के समय में, अहाब ओरोन्टेस नदी पर करकार की लड़ाई में अशूरियों से लड़ने के लिए सेना में शामिल हो गया। बाइबिल में इसका उल्लेख नहीं है। दूसरे, ओरोन्टेस नदी पर उस गतिरोध के बाद 841 तक शल्मनेसर III के तहत, असीरिया वापस आ गया, और उत्तर के राजा, विशेष रूप से जेहू, असीरियन राजा को श्रद्धांजलि देने के लिए मजबूर हो गए। वहाँ एक प्रसिद्ध ब्लैक ओबिलिस्क है जिसमें जाहू को 841 ईसा पूर्व में अशूरियों को श्रद्धांजलि देते

हुए घुटने टेकते हुए चित्रित किया गया था, इसलिए असीरिया ने उत्तरी साम्राज्य की निरंतर स्वतंत्रता के लिए वास्तविक खतरों का दावा करना शुरू कर दिया। 833 ईसा पूर्व में यहोआहाज ने एक उत्तराधिकारी असीरियन राजा को श्रद्धांजलि अर्पित की। इसलिए 800 के दशक में असीरिया ने इज़राइल पर दबाव बनाना शुरू कर दिया।

योना और उरारतु-अश्शूर का कमजोर होना

इसका योना पर क्या प्रभाव पड़ता है? योना थोड़ा बाद में, लगभग 782-780 ईसा पूर्व मैंने उल्लेख किया था कि असीरिया उत्तर में उरारतु के साथ संघर्ष में शामिल था। वे मेसोपोटामिया के उत्तरी भाग से पहाड़ों से आये लोग थे। वे नीनवे के सौ मील भीतर घुस गये। कुछ लोगों का मानना है कि इन पर्वतीय योद्धाओं से असीरिया का अस्तित्व खतरे में पड़ गया था। यह असीरियन कमजोरी का समय है जिसमें हमारे पास बहुत अधिक जानकारी नहीं है, इसलिए पर्याप्त मात्रा में विवाद है। लेकिन कुछ लोग सोचते हैं कि यह वह समय है जब योना नीनवे में था, और यदि ऐसा है, तो अश्शूर को स्वयं उत्तर से इन लोगों द्वारा धमकी दी जा रही है। यह योना के संदेश को सुनने के लिए अश्शूरियों की तत्परता को समझा सकता है जब उसने कहा, "40 दिनों में, नीनवे को नष्ट कर दिया जाएगा।" शायद वह महज़ एक घटिया धमकी नहीं थी; शायद यह असीरिया के लिए एक वास्तविक खतरा था।

आपकी ग्रंथ सूची में डीजे वाइसमैन के एक लेख में, उन्होंने सुझाव दिया है कि 763 ईसा पूर्व में एक सूर्य ग्रहण था, 765 में एक अकाल था, और एक भूकंप था जो सभी उस सामान्य समय सीमा में थे, और इसलिए उन प्रकार के संकेतों ने भी इसमें योगदान दिया हो सकता है योना का सन्देश सुनने के लिए अश्शूर की इच्छा। यदि आप इज़राइल वापस आते हैं, तो अश्शूर की हार से बेहतर इज़राइल के लिए कुछ भी नहीं होगा। योना के समय से पहले, उन्हें न केवल सीरिया से, बल्कि असीरिया से भी खतरा था। सीरिया एक खतरा नहीं रह गया था और असीरिया और भी खतरा बन गया था।

उस संदर्भ में योना को इस राष्ट्र में भेजा गया है जो इज़राइल के लिए एक गंभीर खतरा है। मुझे लगता है कि इससे हमें उस शहर में जाने के लिए योना की अनिच्छा को

समझने में मदद मिलती है, साथ ही योना के संदेश को सुनने के लिए अशूरियों के खुलेपन को भी समझने में मदद मिलती है। तो यह बाहरी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि संदर्भ का एक संक्षिप्त सारांश है।

बी। आंतरिक:

यारोबाम द्वितीय के अधीन समृद्धि

अब "आंतरिक।" आंतरिक स्थिति पर यहां कई विचार जॉन स्टेक के लेख, "जोना की पुस्तक का संदेश " से लिए गए हैं, जिसमें उन्होंने बताया है कि इज़राइल और असीरिया दोनों आर्थिक पुनरुत्थान के दौर में थे। यारोबाम द्वितीय का समय काफी हद तक दाऊद और सुलैमान के समय जैसा था; इज़राइल की सीमाएँ विस्तृत थीं और वहाँ आर्थिक समृद्धि थी। और आप आश्चर्य करते हैं कि क्या गलत हो रहा है, क्योंकि इज़राइल भगवान के प्रति वफादार नहीं है। भविष्यवक्ता इस्राएल में व्यभिचार और अनैतिकता के कारण आने वाले न्याय की बात कर रहे हैं। इसलिए आप यह नहीं कह सकते कि समृद्धि पश्चाताप करने वाले और अब वफादार लोगों के लिए ईश्वर का पुरस्कार है। बल्कि ऐसा प्रतीत होता है कि यह ईश्वर की ओर से उस राष्ट्र को राहत देने का अनुग्रह है जिसे उसने हाल ही में उनके पापों के कारण बड़ी गंभीरता से दंडित किया था।

2 राजा 14:26 को देखें। आपने वहाँ पढ़ा, "प्रभु ने देखा था कि इस्राएल में हर कोई, चाहे दास हो या स्वतंत्र, कितनी बुरी तरह से पीड़ित था; उनकी मदद करने वाला कोई नहीं था। और चूँकि यहोवा ने नहीं कहा था कि वह इस्राएल का नाम स्वर्ग से मिटा देगा, उसने यहोआश के पुत्र यारोबाम के हाथ से उनका उद्धार किया।" अब, वह पद जिस बात का उल्लेख कर रहा है वह यारोबाम की अपनी सीमाओं का विस्तार करके इज़राइल के माध्यम से समृद्धि प्राप्त करने में सफलता है, इसके विपरीत जो पहले सीरियाई लोगों द्वारा उत्पीड़न का मामला था - असीरियन नहीं बल्कि सीरियाई - जिन्होंने इज़राइल पर दबाव डाला था। इसलिए मैंने आपकी रूपरेखा पर जो नोट किया है वह यह है कि लोगों को अभी भी याद है कि एलिय्याह और एलीशा के समय में, अहाब और यहोआहाज के समय में, भगवान ने

इज़राइल के साथ कैसे व्यवहार किया था, जिसमें इज़राइल पर न केवल विदेशी राष्ट्र की सरकार थी, भविष्यवक्ताओं द्वारा फटकार के शब्द, लेकिन पड़ोसी अन्यजातियों पर भगवान के आशीर्वाद के संकेत भी।

एलिय्याह और एलीशा का सीरिया को लाभ

उदाहरण के लिए, एलिय्याह के समय में इस्राएल में बहुत सी विधवाएँ थीं, परन्तु जेरापत की विधवा के माध्यम से ही यहोवा ने अकाल के समय एलिय्याह को उसका भरण-पोषण करने के लिए भेजा। अब यीशु उसका उल्लेख करते हैं। एलीशा के समय में बहुत से कोढ़ी थे, परन्तु केवल सीरियाई अधिकारी नामान ही ठीक हुआ था। वह दया उस पर तब भी दिखाई गई, जब उस समय उसका राष्ट्र, सीरिया, इज़राइल पर हावी था। वास्तव में, इस सामान्य समय में, अहाब से यहोआहाज तक, आप पाते हैं कि सीरिया पर समृद्धि के माध्यम से ईश्वर द्वारा विशेष अनुग्रह दिखाया गया था। एलिजा को सीरिया में हजाएल का अभिषेक करने के लिए नियुक्त किया गया था, एलीशा ने भविष्यवाणी की थी कि वह इसराइल के लिए बुरा होगा। एलीशा ने चमत्कारिक ढंग से सीरियाई सेना को बचाया जो इज़राइल पर हमला कर रही थी। तो आपको आश्चर्य होगा, यहाँ क्या हो रहा है?

Deut. 32:21 भगवान ने विदेशी राष्ट्रों को आशीर्वाद देकर इसराइल को ईर्ष्या के लिए उकसाया है, स्टेक जिस सिद्धांत की ओर इशारा करते हैं वह वही प्रतीत होता है जो मूसा ने व्यवस्थाविवरण 32:21 में मोआब के मैदानों पर इज़राइल को समझाया था। इसमें लिखा है, “उन्होंने मुझमें उस चीज़ के कारण ईर्ष्या पैदा की जो कोई ईश्वर नहीं है और अपनी बेकार मूर्तियों से मुझे क्रोधित किया। मैं उन लोगों के कारण उन से ईर्ष्या करूंगा जो लोग नहीं हैं; मैं उनको ऐसी जाति के द्वारा क्रोधित करूंगा जो समझ नहीं रखती।” मेरेडिथ क्लाइन ने ड्यूटेरोनॉमी, *एक महान राजा की संधि* पर अपने काम में इस पर टिप्पणी की है, और कहते हैं, “अगर उसने कनान के गैर-देवताओं के साथ वेश्या की भूमिका निभाई तो वाचा के श्रापों ने इज़राइल को विलुप्त होने की धमकी दी। *लेक्स टैलियोनिस सिद्धांत* को

लागू करते हुए , यानी, प्रतिशोध का नियम, भगवान गैर-लोगों के माध्यम से इज़राइल में ईर्ष्या भड़काएगा। उन्होंने मुझ में उन लोगों के द्वारा ईर्ष्या उत्पन्न की जो परमेश्वर नहीं हैं, मैं उन लोगों के द्वारा उन में ईर्ष्या उत्पन्न करूंगा जो मनुष्य नहीं हैं। "वह उन चुने हुए लोगों को अस्वीकार कर देगा जिन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया था, उनसे अपनी वाचा संबंधी सुरक्षा हटा देगा और ऐसे लोगों को अनुदान देगा जो अपने बच्चों पर विजय पाने के लिए उसकी वाचा के पक्ष को नहीं जानते थे।" तो ऐसा लगता है कि प्रतिशोध का सिद्धांत, या प्रतिस्थापन का सिद्धांत, आप इसे कह सकते हैं, योना के समय से ठीक पहले, इज़राइल और सीरिया के साथ भगवान के व्यवहार में इज़राइल में काम कर रहा था। वह एक तरह से सीरिया को आशीर्वाद दे रहा है और इजराइल पर अत्याचार कर रहा है। तो यह योना के समय से ठीक पहले की बात है। अब, असीरिया से अपनी हार के कारण सीरिया का पतन हो रहा है। और यहोवा का जो वचन योना ने यारोबाम के विषय में कहा था, वह पूरा होने पर था। तुम्हें याद होगा कि यह भविष्यवाणी की गई थी कि यारोबाम की सीमाएँ फ़रात तक फैलेंगी। यह सीरिया की कीमत पर हो रहा है। इस्राएल उत्तर की ओर हमात तक फैला हुआ था।

अमोस और होशे ने इज़राइल के पाप की निंदा की

फिर भी, जबकि ऐसा हो रहा है इजराइल में सब कुछ ठीक नहीं है। आमोस इस्राएल के पाप की निंदा कर रहा था या निंदा करने वाला था। जब हम अमोस में पहुँचेंगे तो हम उनमें से कुछ पाठों को देखेंगे। वह भविष्यवाणी कर रहा था कि इस्राएल दमिश्क अर्थात् अश्शूर से आगे बन्धुवाई में जानेवाला है। इजराइल को नीचा दिखाना है। इस निर्णय का साधन मेसोपोटामिया क्षेत्र का एक राष्ट्र होगा। होशे 4:1, 10:6, और 11:5 में वही संदेश प्रचारित कर रहा था। होशे ने अश्शूर का उल्लेख किया है। इसलिए, इज़राइल की विशेषता गर्व और शालीनता की भावना, धार्मिक धर्मत्याग में दृढ़ता और नैतिक भ्रष्टाचार है। उसने वास्तव में अपना विशेष पद खो दिया जो परमेश्वर के चुने हुए लोग होने के कारण उसका था, लेकिन वास्तव में क्या हो रहा है कि इज़राइल ने उसके चुनाव को विशेषाधिकार के चुनाव के रूप में देखा, लेकिन यह एक गलत धारणा थी, और वह इस तथ्य से अनभिज्ञ थी कि यह

सेवा के लिए चुनाव था.

प्रतिस्थापन: भगवान के पास लौटें या वह कहीं और काम करेगा

तो यही स्थिति है. परमेश्वर ने योना को अश्रू जाने के लिए कहा। उसे एक बुतपरस्त राष्ट्र को उस वाचा के दायित्वों और विशेषाधिकारों के साथ प्रस्तुत करना है जिसे इज़राइल अस्वीकार कर रहा है। और ऐसा लगता है कि प्रतिस्थापन के इस विचार का उल्लेख यीशु ने ल्यूक 4:25-26 में जरापत और नामान की विधवा के संबंध में किया है; वह सिद्धांत जो सीरियाई लोगों के संबंध में इस समय तक पहले ही प्रदर्शित हो चुका था। यदि परमेश्वर के लोग इस संदेश को अस्वीकार कर देते हैं, तो अन्यजातियों को वाचा के दायित्वों और विशेषाधिकारों के लिए बुलाया जाएगा। अब यह स्टेक का सुझाव है कि आंतरिक रूप से क्या चल रहा है और जोनाह के नीनवे जाने वाले इस मिशन का धार्मिक महत्व क्या है। यह प्रतिस्थापन है; यदि आप भगवान की ओर नहीं मुड़ते हैं, तो भगवान कहीं और काम करेंगे। परमेश्वर के लोगों को हमेशा इस सच्चाई के प्रति सचेत रहना चाहिए। "जो सोचता है कि वह खड़ा है, वह सावधान रहे, कहीं वह गिर न जाए।" हमारे पास परमेश्वर का वचन नहीं है। यदि हम वफ़ादार और आज्ञाकारी नहीं हैं, तो भगवान अपना काम कहीं और ले जा सकते हैं और हमें अपने अभिशाप और न्याय के अधीन रख सकते हैं।

मेरे लिए यह देखना दिलचस्प होगा कि पश्चिम में ईसाई धर्म के संबंध में अगले 25 से 50 वर्षों में क्या होगा। और ईसाई धर्म का क्या होता है, मान लीजिए चीन में, जो एक बंद देश रहा है, लेकिन जो मैं पढ़ रहा हूं, वहां ईसाई धर्म उल्लेखनीय रूप से फल-फूल रहा है। क्या यह प्रतिस्थापन के इस सिद्धांत का एक और उदाहरण है? क्या ईश्वर उन लोगों से मुंह मोड़ रहा है जिनके पास सभी विशेषाधिकार हैं, और काम कर रहा है और कहीं और चला जा रहा है?

योना के पास वापस जाने के लिए, नीनवे के लिए उसके मिशन का महत्व केवल नीनवे के लोगों तक ही सीमित नहीं है, इसमें इज़राइल और भगवान के साथ उनका अपना रिश्ता भी शामिल है। क्या एलिय्याह और एलीशा के समान पैटर्न के बाद भगवान

अशूरियों को इस भविष्यवाणी संदेश के माध्यम से अपने स्वयं के पथभ्रष्ट लोगों पर अपने दावे नहीं दबा रहे थे? तो ये ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर मेरी टिप्पणियाँ हैं।

2. पुस्तक के मुख्य उद्देश्य a. पाप लादेन इसराइल को योना की फटकार

उसके बाद है, "पुस्तक के मुख्य उद्देश्य।" "उद्देश्य" के अंतर्गत, मैंने चार बिंदु सूचीबद्ध किए हैं। सबसे पहले, मुझे लगता है कि योना के मंत्रालय ने, विरोधाभास के माध्यम से, इस्राएलियों के विद्रोही चरित्र को उजागर करने का काम किया। बहुत से भविष्यवक्ता हुए परन्तु उन्होंने पश्चाताप नहीं किया। परन्तु जब नीनवे वचन सुनता है, तो पछताता है!

अपने उद्धरणों में पृष्ठ 44 देखें, स्टेक इस पर टिप्पणी करते हैं, "जोना के नीनवे के भविष्यसूचक मिशन की घटनाएँ पाप से भरे और जिद्दी इज़राइल के लिए फटकार के रूप में भी काम करती हैं। यहां तक कि मूर्तिपूजक नाविक भी आश्चर्यचकित हैं कि योना, जो 'स्वर्ग के भगवान, जिसने समुद्र और सूखी भूमि बनाई,' की सेवा करता है, ऐसे भगवान से भागने का प्रयास करेगा, और आश्चर्य के उनके शब्द एक ही समय में एक फटकार दर्ज करते हैं (द) प्रश्न *आपने क्या किया है?* [1:10]) हमेशा आश्चर्य और आरोप दोनों का संकेत देता है। इसके अलावा, योना के कल्याण के लिए नाविक की चिंता नीनवे के लोगों के प्रति योना के संवेदनहीन रवैये के विपरीत है। यह भी स्पष्ट है कि योना के एक-चिह्न मंत्रालय में नीनवे के लोगों का पश्चाताप इस्राएल के पाप के लिए एक स्थायी फटकार के रूप में कार्य करता है, जिन्होंने हठपूर्वक भविष्यवक्ताओं की चेतावनियों को सुनने से इनकार कर दिया, तब भी जब ये चेतावनियाँ शक्तिशाली संकेतों के साथ थीं जैसा एलिय्याह और एलीशा के मंत्रालयों में था। एक बार फिर, यहोवा 'उन्हें उन लोगों के साथ ईर्ष्या करने के लिए प्रेरित करना चाहता है जो लोग नहीं हैं।'" तो इसके विपरीत, योना का संदेश इस्राएल की विद्रोहशीलता के लिए एक चेतावनी भी प्रदान करता है।

बी। इसराइल के पास प्रभु के उद्धार के लिए विशेष अधिकार नहीं थे दूसरा, मुझे लगता है कि योना का मिशन इसराइल पर यह प्रभाव डालने का काम करता है कि उसके पास प्रभु

के उद्धार के लिए विशेष अधिकार नहीं थे। यह आपको नीनवे के लोगों के पश्चाताप के कारण पुस्तक के अंत में मिलता है। राष्ट्रीय गौरव पर आधारित धार्मिक विशिष्टतावाद और चुनाव की गलत अवधारणा के किसी भी विचार को यहां खारिज कर दिया गया है। इज़राइल का चुनाव ईश्वर की कृपा और दया पर था, और इसे ईश्वर जहां भी बढ़ाना चाहे, बढ़ाया जा सकता है; यह विशेष रूप से उनके लिए नहीं था। और जब परमेश्वर ने इसे इस्राएल की सीमा से आगे बढ़ा दिया, तब योना भी क्रोधित हुआ।

सी। जोना का इरादा एक प्रतिनिधि भूमिका निभाने का था तीसरा, यह संभव है कि जोना का इरादा किसी प्रकार की प्रतिनिधि भूमिका निभाने का था और जो लोग इसे पढ़ते हैं उन्हें किताब इसी तरह से समझ में आएगी। मुझे लगता है कि यदि आप टिप्पणियों और दुभाषियों को देखें, तो कई लोग इस पर टिप्पणी करेंगे, लेकिन प्रतिनिधि भूमिका वास्तव में क्या है, इसके लिए कोई बड़ा सबूत नहीं है। उसके लिए यहां तीन सुझाव दिए गए हैं। पहला, सामान्यतः मानव जाति का प्रतिनिधि। कथा मनुष्य और मनुष्यों के साथ भगवान के तरीकों और भगवान के साथ उनके संबंधों के बारे में कुछ कहती है। दूसरे, उन लोगों का प्रतिनिधि जिन्हें ईश्वर ने भविष्यसूचक मंत्रालय सौंपा है। योना उन लोगों के लिए एक वस्तुगत सबक है जो अपने बुलावे से मुंह मोड़ लेते हैं। वहां फोकस विशेष रूप से जोना और उसकी कॉल पर है। तीसरी, और शायद सबसे मान्य परिकल्पना, यह है कि योना इसराइल, ईश्वर के लोगों का प्रतिनिधि है। स्टेक टिप्पणी करते हैं, "इसमें संदेह करने का कोई कारण नहीं है कि अश्शूरियों के प्रति योना के रवैये में सभी इज़राइल खुद को उसके साथ पहचानेंगे और खुद को उसके द्वारा धिक्कारा जाना जानेंगे। और इसमें संदेह करने का कोई कारण नहीं है कि लेखक का इरादा बिल्कुल यही था।" इसके अलावा योना इज़राइल के भविष्य के इतिहास के बारे में भी कुछ बता सकता है। योना, एक इस्राएली, को समुद्र में फेंक दिया गया और फिर उसे सौंप दिया गया ताकि वह अपना मिशन पूरा कर सके। इसलिए, इस्राएल राष्ट्र अपनी अवज्ञा के कारण निर्वासन की पीड़ा से तब तक गुज़रेगा जब तक कि उसका कोई अवशेष दुनिया में अपना मिशन पूरा करने के लिए वापस नहीं आ जाता। इस सीमा तक

प्रतीकात्मक विद्यालय सही हो सकता है। योना इस्राएल का अच्छी तरह से प्रतिनिधित्व कर सकता है। लेकिन साथ ही जोनाह एक वास्तविक ऐतिहासिक व्यक्ति हैं।

डी। इसराइल की बेवफ़ाई परमेश्वर के उद्देश्यों को विफल नहीं करेगी इसराइल के लिए संदेश यह है कि चाहे इसराइल कितना भी विद्रोह करे और विफल हो जाए—परमेश्वर इसराइल में और उसके माध्यम से अपने उद्देश्यों तक पहुंचेगा। जैसा कि स्टेक कहते हैं, "...इज़राइल की वर्तमान बेवफ़ाई यहोवा के इन ऐतिहासिक उद्देश्यों को विफल नहीं करेगी। हालाँकि यह इज़राइल के इतिहास में विभिन्न महत्वपूर्ण अवधियों में पहले भी स्पष्ट किया जा चुका है, यहाँ इसे अत्यधिक नाटकीय ढंग से प्रदर्शित किया गया है। योना, एक व्यक्ति में पैगम्बर का पद - इसराइल के लिए ईश्वर के प्राथमिक करिश्माई उपहारों में से एक - और 'चुने हुए' लोगों की भावना की विकृत संकीर्णता को मूर्त रूप देते हुए, ईश्वर द्वारा, उसकी इच्छा के विपरीत, एक मिशन को पूरा करने के लिए बाध्य किया जाता है। नीनवे पर दया. इस्राएली भविष्यवक्ता का पाप अशशूर शहर के लिए परमेश्वर के दयालु उद्देश्य को विफल नहीं कर सकता। परमेश्वर अपनी इच्छा को आगे बढ़ाने के लिए उस पाप का उपयोग करने में भी सक्षम है। जब योना अंततः नीनवे जाता है, तो वह न केवल इसराइल के एक भविष्यवक्ता के रूप में जाता है, बल्कि वह हमारे प्रभु (लूका 11:30) के अनुसार, नीनवे के लोगों के लिए एक अद्भुत, ईश्वर-निर्मित संकेत के रूप में भी जाता है, जिसका उन पर गहरा प्रभाव पड़ेगा। उन्हें। उनके प्रति लोगों की प्रतिक्रिया की अपूर्णता, कमजोरी और टूटन इतिहास के संप्रभु भगवान को उनके बचाने के उद्देश्यों को पूरा करने में बाधा नहीं डालती है। 'उद्धार यहोवा की ओर से है।' यहोवा उसके बावजूद इस्राएल में अपना उद्धार कार्य करेगा, न कि उसके कारण।”

इ। डोमिनेट थीम: ईश्वर की संप्रभुता जो मानव विद्रोह के बावजूद अपने उद्देश्यों को पूरा करती है

मुझे लगता है कि वह परिप्रेक्ष्य पुस्तक में सबसे प्रमुख विषय का प्रतीक है: ईश्वर की

संप्रभुता जो मानवीय विद्रोह के बावजूद अपने उद्देश्यों को पूरा करती है। यह परमेश्वर ही है जिसके पास पहला शब्द और अंतिम शब्द है। उन्होंने किताब लिखी। ध्यान दें कि यह 1:1 से शुरू होता है, और समाप्त होता है "क्या मुझे उस महान शहर के बारे में चिंतित नहीं होना चाहिए?" योना 4:10 और 11 देखें, "परन्तु यहोवा ने कहा, 'तू ने इस बेल की चिन्ता की है, यद्यपि तू ने इसकी देखभाल नहीं की और न ही इसे बड़ा किया... परन्तु नीनवे में एक लाख बीस हजार से अधिक लोग हैं... क्या मुझे नहीं होना चाहिए उस महान शहर के बारे में चिंतित हैं?'" तो यह भगवान ही हैं जिनके पास पहला और आखिरी शब्द है। कथा के मुख्य भाग में वह हमेशा मुद्दे को थोपता रहता है। तो स्टेक कहता है, "उसके फैसले से नीनवे को खतरा है; वह भविष्यवक्ता को नियुक्त करता है; वह समुद्र में तूफान भेजता है; वह मछली को 'नियुक्त' करता है; वह पश्चाताप करने वाले नगर को बचा लेता है; वह लौकी प्रदान करता है; वह विनाशकारी कृमि को 'नियुक्त' करता है; वह दमनकारी पूर्वी हवा को 'नियुक्त' करता है; वह भविष्यवक्ता को डाँटता है।" यहां तक कि योना की प्रार्थना भी गवाही देती है, "उद्धार प्रभु की ओर से है," जो कि योना 2:9 में है। तो कथा वास्तव में यहोवा के कार्यों की कथा है। स्टेक कहते हैं, "इसलिए, कोई भी व्याख्या, जो स्पष्ट पुष्टि, या अंतर्निहित सुझाव द्वारा, जोना को केंद्र में रखती है, को केवल इस भविष्यवाणी लेखन की गलत व्याख्या के रूप में आंका जा सकता है।" योना परमेश्वर के हाथ में एक उपकरण है। ईश्वर की संप्रभुता इस पुस्तक के केंद्र में है।

डी। योना मसीहा की मृत्यु और पुनरुत्थान बिंदु के चित्रण के रूप में डी। अक्सर यह कहा जाता है कि मैथ्यू संदर्भ के कारण पुस्तक का उद्देश्य उस व्यक्ति की ओर इशारा करना है जो योना से महान है। ईजे यंग वास्तव में कहते हैं, "जोना की पुस्तक का मूल उद्देश्य उसके मिशनरी या सार्वभौमिक शिक्षण में नहीं पाया जाता है। बल्कि यह दिखाने के लिए है कि योना को अधोलोक की गहराइयों में डाला जाना और फिर भी जीवित उठाया जाना मसीहा की अपने पापों के लिए मृत्यु और मसीहा के पुनरुत्थान का एक उदाहरण है। मुझे ऐसा लगता है कि यंग जब कहते हैं कि यह पुस्तक का मूल उद्देश्य है तो वे अपनी बात

को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करते हैं।

यंग की टिप्पणी की तुलना जे. बार्टन पायने की टिप्पणी से करें, जो कहते हैं, “ प्रभु यीशु ने बाद में मछली में योना के प्रवास की अवधि का उपयोग कब्र में अपने तीन दिनों का वर्णन करने के लिए किया; लेकिन इस तरह वह न तो भविष्यवक्ता को स्वयं का एक प्रकार मानता है और न ही यह सुझाव देता है कि योना के चमत्कारी अनुभव को तय करने में यह भगवान का मूल इरादा था।

स्टेक टिप्पणी करते हैं, "कुछ लोगों ने योना की पूरी किताब को इस तरह से संभाला है जैसे कि इसका प्राथमिक उद्देश्य केवल मसीह का एक भविष्यसूचक प्रकार प्रदान करना था। लेकिन अगर इतना ही कहा जा सकता है, तो यह स्वीकार करना होगा कि विरोधी प्रकार के प्रकट होने तक यह प्रकार पूरी तरह से एक पहली बना रहेगा, और जिस इज़राइल को पुस्तक शुरू में संबोधित की गई थी, उसने इसे गलत समझा होगा। इसका वास्तविक अर्थ अवश्य ही उनके लिए एक बंद रहस्य बना रहेगा।" मुझे लगता है कि स्टेक इसमें सही है। मुझे लगता है कि यह गलत ज़ोर है; मैं कुछ कहना पसंद करूंगा जहां वह कहते हैं कि यीशु ने इस कहानी का उपयोग कब्र में अपने तीन दिनों का वर्णन करने के लिए किया था बजाय इसके कि पुस्तक का पूरा उद्देश्य मछली में यीशु और योना की इस उपमा पर आधारित हो।

वी. अमोस ए. लेखक और पृष्ठभूमि

चलिए अमोस की ओर चलते हैं। मैं नोट्स में जो कुछ उजागर करता हूं उसमें चयनात्मक रहना चाहता हूं। मैं अमोस 9 मार्ग के लिए कुछ समय बचाना चाहता था। ए के अंतर्गत, "लेखक और पृष्ठभूमि।" एक, "उसका नाम है।" वह 1:1 से तेकोआ का चरवाहा अमोस है। वह पुराने नियम में एकमात्र अमोस है। वह यहूदा से आता है और चरवाहा था।

2. "उनकी भविष्यसूचक गतिविधि का स्थान।" वह, होशे के विपरीत, दक्षिणी साम्राज्य से था, लेकिन उसकी भविष्यवाणी गतिविधि मुख्य रूप से इज़राइल, यानी उत्तरी साम्राज्य की ओर निर्देशित थी। यह न केवल 1:1 के परिचयात्मक वाक्य में प्रकट होता है,

बल्कि अध्याय 7 में भी दिखाई देता है जहां अमोस बेथेल में प्रकट होता है। इसका मतलब यह नहीं है कि उसके पास यहूदा के बारे में कहने के लिए कुछ नहीं है, और उस पर विशेष रूप से एक खंड है। वह यहूदा के उस परमेश्वर के जन की याद दिलाता है जिसका उल्लेख 1 राजा 13 में यारोबाम प्रथम के समय में किया गया था जब वे बेतेल में सोने के बछड़े स्थापित कर रहे थे।

3. "उसकी भविष्यवाणी गतिविधि का समय।" आमोस 1:1 में कहा गया है कि उसने यहूदा में उज्जियाह के समय में भविष्यवाणी की थी, आप पढ़ते हैं, " तकोआ के चरवाहों में से एक आमोस के शब्द - उसने भूकंप से दो साल पहले इज़राइल के बारे में क्या देखा, जब उज्जियाह यहूदा और यारोबाम का राजा था यहोआश का पुत्र इस्राएल का राजा था।" इस प्रकार उस ने यहूदा के उज्जियाह और इस्राएल के यहोआश के पुत्र यारोबाम के समय में, भूकंप से दो वर्ष पहिले, भविष्यवाणी की। वह होशे का समकालीन था, हालाँकि होशे ने बाद के राजाओं के माध्यम से भविष्यवाणी की थी। यदि आप होशे 1:1 को देखें, तो होशे उज्जियाह में जोड़ता है - जोथम, आहाज और हिजकियाह। इसलिए आम तौर पर यह सोचा जाता है कि होशे कुछ ओवरलैप के साथ, अमोस का युवा समकालीन और उत्तराधिकारी था।

आमोस 1:1 में भी इस भूकंप का उल्लेख है, उसने "उस भूकंप से दो वर्ष पहले" भविष्यवाणी की थी। जकर्याह 14:5 में उस भूकंप का संदर्भ है, जहां यह कहा गया है, "तुम वैसे ही भागोगे जैसे तुम यहूदा के राजा उज्जियाह के दिनों में भूकंप से भागे थे।" और याद रखें जकर्याह निर्वासन के बाद था, इसलिए यह काफी बाद में हुआ, उजियाह के समय से निर्वासन के बाद तक इस भूकंप की स्मृति अभी भी है। समस्या यह है कि हम उस भूकंप की सटीक तारीख नहीं जानते हैं। इसलिए भूकंप की तारीख निर्दिष्ट करने के मामले में यह बहुत मददगार नहीं है। फ्रीमैन ने अमोस के मंत्रालय के समय के लिए 760 से 753 ईसा पूर्व का सुझाव दिया है, और यह 753 ईसा पूर्व में यारोबाम की मृत्यु की चुप्पी पर आधारित है। दूसरे शब्दों में, धारणा यह है कि यदि यारोबाम की मृत्यु हो गई होती, तो यह आपके लिए इतनी महत्वपूर्ण घटना होती इसके उल्लेख की अपेक्षा करेंगे। तो यह उनकी मृत्यु से पहले,

लगभग 760 से 753 ईसा पूर्व है इसलिए अंत बिंदु हैं।

लिनेट वॉकर, एशले पेंगेली, मैलोरी मोएंज, ब्रैडी द्वारा लिखित
चैम्पलिन, निकोल रूक, टेड हिल्डेब्रांट, स्टेफ़नी फिट्ज़गेराल्ड (सं.)
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन
टेड हिल्डेब्रांट
द्वारा पुनः सुनाया गया